राष्ट्रीय कार्यशाला

भारतीय हिमालयी पर्यावरण को प्रभावित करने वाले कारक एवं प्रबंधन

कार्यशाला अवधिः 28-29 जुलाई, 2022

भूमिका

भारतीय हिमालय क्षेत्र प्राकृतिक रूप से समृद्ध है एवं देश के पर्यावरण प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है। हिमालय पर्यावरण जिन प्रमुख कारकों से प्रभावित होता है, उन्हे दो प्रकार से परिभाषित किया जा सकता हैः 1. प्राकृतिक, 2. मानव– जनित । यह दोनों ही कारक एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। प्राकृतिक कारकों में जल, भूमि, मृदा, जैव विविधता, वायु, एवं मौसम संबन्धित कारक आते हैं। मानव जनित करको में प्रदूषण, अनियोजित विकास, वन एवं जैव–विविधता को क्षति आदि कारक आते हैं। हिमालय पर्यावरण को प्रभावित करने वाले कारकों को समझने के लिए देशभर में विभिन्न संस्थनों द्वारा कई प्रकार के शोध कार्य किए जा रहे हैं। इन कार्यों का उपयोग हिमालय क्षेत्र के लिए बनने वाली नीतियों के लिए किया जाता है। यह कार्यशाला भारतीय हिमालय क्षेत्र में कार्य कर रहे इन विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म में लाने के लिए आयोजित की जा रही है। कार्यशाला में सभी विषयों के प्रस्तुतीकरण का माध्यम हिन्दी होगा। जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग हिमालय क्षेत्र में चल रहे शोध कार्यों से अवगत हो पाये एवं इन शोधकार्यों के परिणामों का लाभ स्थानीय पर्यावनीय विषयों के समाधान हेतु उपयोग में लाया जा सके।

गोविंद बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, कोसी-कटारमल, अल्मोड़ा- 263643, उत्तराखंड
www.gbpihed.gov.in

विषय गत क्षेत्र

- हिमनद जनित एवं भूगर्भीय जल से उत्पन्न जल स्रोतों की उपलब्धता, गुणवत्ता एवं प्रबंधन
- मृदा की गुणवत्ता, भू विज्ञान, और पर्यावरण प्रक्रियाओं को प्रभावित करने में योगदान
- जैवविविधता (पादप एवं जीवाणु), उनकी गुणवत्ता एवं उपयोग
- वन पारिस्थिकी तंत्र सेवाएं
- जलवायु परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक एवं प्रभाव
- अपशिष्ठ पदार्थों के प्रबंधन की स्थिति एवं प्रभाव
- आजीविका एवं रोजगार वृद्धि की तकनीकी एवं सतत विकास के उपाय

जी.बी. पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान (GBPNIHE) की स्थापना 1988–89 में भारत रत्न पं. गोविंद बल्लभ पंत के जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान की गई थी। गोविंद बल्लभ पंत, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफ और सीसी), सरकार के एक स्वायत्त संस्थान के रूप में कार्य करता है। संस्थान को वैज्ञानिक ज्ञान को आगे बढ़ाने, एकीकृत प्रबंधन रणनीतियों को विकसित करने, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए उनकी प्रभावकारिता का प्रदर्शन करने और संपूर्ण भारतीय हिमालयी क्षेत्र (आईएचआर) में पर्यावरणीय प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए एक फोकल एजेंसी के रूप में पहचाना गया है। संस्थान का मुख्यालय कोसी–कटारमल, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) में है और छह क्षेत्रीय केंद्रः लद्दाख क्षेत्रीय केंद्र (LRC), लेह में, हिमाचल क्षेत्रीय केंद्र (HRC) कुल्लू (H.P.), गढ़वाल क्षेत्रीय केंद्र (GRC) श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखंड), पंगथांग (सिक्किम) में सिक्किम क्षेत्रीय केंद्र (SRC), ईटानगर (अरुणाचल प्रदेष) में उत्तर–पूर्व क्षेत्रीय केंद्र (NERC), और वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रलाया (नई दिल्ली) में माउंटेन डिवीजन क्षेत्रीय केंद्र (MDRC) स्थित हैं।

अब्स्ट्रैक्ट (सारांश) जमा करने की अंतिम तिथिः

~~10 जुलाई 2022~~ **15 जुलाई 2022 (विस्तारित)**

पंजीकरण की अंतिम तिथिः **10 जुलाई 2022**

पंजीकरण शुल्कः **रु. 500/– (शोधर्थियों के लिए) एवं रु. 1000/– (फैकल्टी)**

बैंकखाता विवरणः खाता संख्याः 3604013559

आई.एफ.एस.सी. कोडः CBIN0281528

बैंक का नामः Central Bank of India

खाता धारक का नामः GBPNIHE-GIA-GENERAL

पंजीकरण का लिंकः https://forms.gle/6hrRFBJAGHriy5mc9

कार्यशाला हाइब्रिड मोड में आयोजित की जाएगी

आयोजकः राजभाषा समिति, गोविंद बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, अल्मोड़ा

अध्यक्षः इं किरीट कुमार, निदेशक, गो.ब.पं.रा.हि.प.सं, अल्मोड़ा

उपाध्यक्षः डा. जी. सी. एस. नेगी

संयोजकः डा. वसुधा अग्निहोत्री

सह संयोजकः इं. आशुतोष तिवारी, डा. कपिल केसरवानी, डा. शैलजा पुनेठा, डा. सुबोध ऐरी, श्री महेश सती

ईमेलः scienceawarenessworkshop@gmail.com